SHRI B. SHANKARANAND: The cautionary statement is put on the label. These are the drugs banned in some countries. I cannot give you the details but we have cautioned about these drugs.

SHRI CHANDRAJIT YADAV: There must be some basis for banning those drugs. Is it on the basis of the technical advice?

SHRI INDRAJIT GUPTA: What is the consumer expected to do after reading that caution on the label?

(Interruptions)

MR. SPEAKER: In this way, can we do justice to the Question Hour?

SHRI B. SHANKARANAND: Out of 18 drugs, 7 drugs have been withdrawn.

We have not allowed 6 of the drugs even to be manufactured in this country.

We have taken a conscious decision with regard to 5 drugs.

SHRI CHANDRAJIT YADAV: Suppose on the label it is written that those drugs are bad. What does it mean? Then why do you allow them to be sold? There must be technical opinion on that.

SHRI SONTOSH MOHAN DEV: Why not have half-an-hour discussion on this?

MR. SPEAKER: We must have half-an-hour discussion on that.

(Interruptions)

SHRI B. SHANKARANAND: I abide by your decision. I should say this because the Hon. Members are interested to know.

(Interruptions)

DR. SUBRAMANIAM SWAMY: Do you promise to take those drugs when you fall sick?

SHRI NIREN GHOSH: Every drug is tested by Indians.

MR. SPEAKER: We shall distribute them equally.

SHRI B. SHANKARANAND: Let the Hon. Members understand that....

MR. SPEAKER: I think we shall take it up later on.

SHRI B. SHANKARANAND: Let the Hon. Members understand that certain drugs have side-effects. Perhaps, every Hon. Member who is taking some drug or the other may be knowing that certain drugs have side-effects. So, the caution is in regard to the side-effects of the use of these drugs. That is the caution.

अध्यक्ष महोदय : छोड़िये, शंकरानन्द जी ।

DR. SUBRAMANIAM SWAMY: When the Hon. Minister says side-effects, does he include death also? I would like to know.

MR. SPEAKER: It means so many things. We shall take it up later on.

SHRI B. SHANKARANAND: That is the end effect.

गिरिडीह-रांची लाइन

†170. **श्री रीतलाल प्रसाद वर्मा :**
श्रीमती माधुरी सिंह :

क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सभा में बार-बार आश्वासन दिये गये थे कि गिरिडीह और रांची के बीच बरास्ता, कोडरमा और हजारीबाग टाउन, एक बड़ी रेल लाइन बिछाने की योजना छठी पंचवर्षीय योजना में सम्मिलित की गई है ;

(ख) इस परियोजना का निर्माण कार्य कब आरम्भ होगा; और

(ग) क्या गिरिडीह और रांची के बीच बरास्ता, कोडरमा और हजारीबाग टाउन उपर्युक्त रेल लाइन (223 किलोमीटर) बिछाने के लिये वर्ष 1982–83 के बजट में धनराशि की व्यवस्था की जायेगी और इस सम्बन्ध में अनिश्चितता दूर करने के लिये इस लाइन का निर्माण कार्य पहले किये गये निर्णय के अनुसार आरम्भ कर दिया जायेगा ?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF RAILWAYS AND IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI MALLIKARJUN): (a) to (c). A statement is liad on the Table of the House.

Statement

In the course of replying to the Supplementaries to Question No. 364 on 11-12-1980, raised by Shri Kamla Misra Madhukar, it was clarified by the then Minister for Railways that a survey had been completed, and the issue of including it in the 6th Five Year Plan was receiving consideration. He also added that Planning Commission's clearance would be necessary.

What the then Railway Minister had meant was that a reconnaissance study had been carried out by the Eastern Railway, whose report was received in Board's office in October 1980. No detailed traffic survey or financial appraisal of the project had been undertaken. It was, therefore, considered necessary that an engineering-cum-traffic survey for the new line between Ranchi and Giridih *via* Hazaribagh Town and Koderma may be conducted to precisely estimate the cost and traffic prospects of the new rail link, before a final investment decision on the construction could be taken after Planning Commission's approval.

This survey is in progress. In view of the difficult terrain through which the proposed line will pass, it will not be possible to complete the survey before 1983 end.

The decision regarding inclusion of the project in the 6th Plan can be taken only after completion of the detailed survey and its approval by the Planning Commission, if found financially viable.

श्री रीत लाल प्रसाद वर्मा : अध्यक्ष महोदय, इसका जो स्टेटमेंट आज है, जो भूतपूर्व रेल मंत्री थे ।.

अध्यक्ष महोदय : नहीं, उस दिन मामला यह था कि एश्योरेंस दिया गया है या नहीं दिया गया है, पहला सवाल यह था । आज मंत्री पूरी तरह, मेरे ख्याल में, तैयारी कर के आयें हैं ।

श्री रीत लाल प्रसाद वर्मा : अध्यक्ष जी जो आप हमारी तरफ से कह रहे हैं, वह पहले यही बतायें कि उन्होंने यह कहा था कि नहीं कि यह छठी पंचवर्षीय योजना में इन्क्लूड होने जा रहा है । यह एश्योरेंस उनका है या नहीं ?

श्री मल्लिकार्जुन : इसक्वैश्चन के बारे में जैसे समाधान देना मैं शुरु करूंगा,

(व्यवधान)

श्री मल्लिकार्जुन : 7, 8 यदि एक साथ उठेंगे तो मुझे मुश्किल हो जायेगा ।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आज सुन्दर सूट पहन कर आए हैं ।

DR. SUBRAMANIAM SWAMY: I hope this is not the new railway uniform that he wears.

MR. SPEAKER: It does not matter. It fits him.

SHRI MALLIKARJUN: The actual position is that in 1978 and 1980 there was a reconnaissance study conducted

and in late 1980 the report was submitted. On that basis the then Minister ordered a preliminary engineering-cum-traffic survey and after completion of this survey by the end of 1983, the report will be examined subject to the clearance by the Planning Commission. It is left to the Planning Commission to include it in the Sixth Five Year Plan if it is viable and funds available.... (*Interruptions*) No assurance was given. Reconnaissance survey means a rough survey and on the basis of that, in order to find out the economic, technical and financial viability, a preliminary engineering-cum-traffic survey has to be conducted and after that, the project has to be studied properly.

श्री रीत लाल प्रसाद वर्मा : मंत्री जी ने जो अभी कहा है वह भी रेम्युनरेटिव होगा या नहीं होगा, यह विचार करने के बाद होगा, ऐसा नहीं है। मैं पांडे जी का स्टेटमेंट पढ़कर सुनाता हूं। यह 16 मार्च, 1981 का है पृष्ठ 527 पर :

> "**श्री केदार पांडे** : रांची टाउन से हजारीबाग टाउन हुआ है। हजारीबाग रोड को हम लोगों ने छोड़ दिया है क्योंकि उसमें रेम्युनरेटिव हो जाता है। इसलिए रांची टाउन से हजारीबाग, हजारीबाग से कोडरमा और कोडरमा से गिरिडीह—यह ठीक है। इसमें हमने हजारीबाग रोड को छोड़ दिया है।"

ये ऐसा बोलते हैं कि रेम्युनरेटिव हो जाता है लेकिन इनका इंजीनियरिंग सर्वे और इस बात का जो बजट है उसमें देखा जाए तो स्पष्ट हो जायेगा कि यह कितना कंफ्यूजिंग और गुमराह करने वाला है। अध्यक्ष महोदय, इस रूट को फिर एक बार चेंज कर दिया है। फिर लिखते हैं—रांची से हजारीबाग टाउन से, हजारीबाग रोड से...। इस बार हजारीबाग रोड से कर दिया है जबकि उस बार कोडरमा था। "गिरिडीह तक एक नयी बड़ी लाइन का प्रारम्भिक इंजीनियरी एवं यातायात सर्वेक्षण, 227 किलोमीटर। इसमें 13 लाख 99 हजार रुपए का प्रावधान रखा है।"

आखिर पहले सर्वे हो गया था लेकिन ये फिर प्रारम्भिक ही लिखते हैं। तो यह रुपया कहां जायेगा और कहां खर्च हो रहा है? या तो यह बोगस है या आफिसर्स गड़बड़ी करते हैं—यह समझ में नहीं आता है।

श्री मल्लिकार्जुन : बोगस नहीं है और न गड़बड़ है। यह पिछड़े हुए स्थान हैं और सरकार का विचार है कि पिछड़े हुए स्थानों की उन्नति होनी चाहिए। इसमें 1978 में रेकनाईज़न्स का जो सर्वे हुआ उसकी रिपोर्ट आए तो प्रिलिमिनरी इंजीनियरिंग कम ट्रेफिक सर्वे के वास्ते 1981–82 के बजट में इंक्लूड करें और उसकी प्रोजेक्ट रिपोर्ट जब समाप्त होगी तब निश्चय करेंगे।

श्री रीत लाल प्रसाद वर्मा : अध्यक्ष महोदय, रिपोर्ट तो जब आए तब विचार करें लेकिन यह बात स्पष्ट हो गई है कि यह रेम्युनरेटिव नहीं है और यह बात फिर नहीं आनी चाहिए क्योंकि यह बैकवर्ड एरिया है और इन्होंने बताया है कि छठी योजना में इंक्लूड होने जा रहा है। (**व्यवधान**) इसके बाद यह इंक्लूड होना चाहिए।

श्री मल्लिकार्जुन : यह बात स्पष्ट भी हुई है और अस्पष्ट भी। माननीय सदस्य पेशेन्स रखें तो और स्पष्ट हो जायेगी।

अध्यक्ष महोदय : आप गाड़ी के आगे और पीछे, दोनों तरफ इंजन लगा दीजिए।